A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का सांगीतिक अध्ययन

SUNIL KUMAR SAHU
Assistant Professor (Guest), Government Ram Bhajan Rai N.E.S. Post Graduate College, Jashpur Nagar (CG)

OPEN ACCESS

सार

छत्तीसगढ़ी लोक गीत छत्तीसगढ़ की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा हैं, जो यहाँ की लोक परंपराओं, रीति-रिवाजों, जीवन शैली, सभ्यता, संस्कृति एवं भावनाओं को जीवंत रूप में व्यक्त करता हैं। ये लोक गीत ग्रामीण जीवन, प्रकृति, प्रेम (संयोग-वियोग), कृषि, त्योहारों, और सामाजिक रीति-रिवाजों से प्रेरित होता हैं। इन लोक गीतों में सरल, मधुर, स्पष्ट और स्थानीय बोली का प्रयोग किया जाता है, जो श्रोताओं के मन को भाव विभोर कर देता है। छत्तीसगढ़ी लोक गीत विभिन्न अवसरों जैसे विवाह, जन्म, फसल कटाई, और धार्मिक उत्सवों में गाया जाता हैं। करमा, ददरिया, सुआ, पंडवानी, और गौरा-गौरी गीत इनमे प्रमुख हैं इसके अतिरिक्त भी छत्तीसगढ़ अनेकों लोक गीत देखने को मिलता हैं। ये लोक गीत केवल समाज में मनोरंजन का कार्य नहीं करता हैं, बल्कि समाज में एकता और सांस्कृतिक मूल्यों को भी बनाये रखते हैं। छत्तीसगढ़ी लोक गीत छत्तीसगढ़ को देश-विदेश में विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता हैं।

***मुख्य शब्द** : लोक गीत, लोक साहित्य, लोक संस्कृति, छत्तीसगढ़, गीत।*

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ भी भारत के अन्य राज्यों के जैसे लोक गीतों से समृद्ध हैं, छत्तीसगढ़ी लोकगीतों से यहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता प्रतिबिंबित होता है। इन लोकगीतों की प्रमुख विशेषता है कि यह गीत लोक (जन सामान्य) द्वारा निर्मित होता हैं जिसमे वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा समाहित रहती है। ये लोक गीत केवल छत्तीसगढ़ के लोगों का मनोरंजन ही नहीं करती हैं बाकि यह समाज की दुःख-सुख, करुणा, वैराग्य आदि को भी अभिव्यक्त करती हैं। छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है और यहाँ के लोक गीतों में इसकी झलक हमें देखने को मिलता हैं। खेत-खलिहानों में गाया जाने वाला ददरिया, उत्सवों-पर्वों में गाया जाने वाला पंथी, शिशु के जन्म अवसर पर गाया जाने सोहर या विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला भड़ौनी-गीत, ये सभी लोकगीत छत्तीसगढ़ के सामाजिक जीवन को अपने में समेटे हुए हैं और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के पोषण में विशिष्ट भूमिका निभाती हैं। लोक गीत केवल अपने में संस्कृति को ही नहीं समाय रखता वरन् यह उस जगह की सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि को भी अपने अन्दर समाहित करता हैं।

छत्तीसगढ़ी लोक गीत यहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो छत्तीसगढ़ की स्थानीय भाषा, परंपराओं, और जीवनशैली को इंगित करता हैं। ये लोक गीत विभिन्न अवसरों जैसे त्योहार, विवाह, फसल कटाई, और सामाजिक समारोहों में गाए जाते हैं। इन लोक गीतों में करुणा, शोक, प्रेम, प्रकृति, सामाजिक मूल्य, और पौराणिक कथाओं के भाव समाहित होते हैं। जो छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत का एक अहम हिस्सा हैं। छत्तीसगढ़ सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का समावेश लोक गीतों में होता हैं यह लोक गीत अलिखित एवं लिखित दोनों रूपों में विद्यमान हैं। लोक गीत व्यक्ति के जीवन में रस घोलता हैं और उसे आनंदित करता हैं, जिससे यहाँ के किसान एवं मजदूरों का थकान पल भर में मिट जाता हैं, क्योंकि ये गीत उन्हें अन्दर से भाव विभोर कर देती हैं। लोक गीत युवाओं में प्रेम की भावना को अभिप्रेरित करता हैं, बूढ़ों में एक नया उत्साह एवं उमंग भरता हैं और बच्चों में नींद को पूरी करती हैं। इस प्रकार छत्तीसगढ़ में लोक गीत का महत्व बढ़ जाता हैं।

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का वर्गीकरण

छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य में लोक गीत सर्वाधिक लोकप्रिय विधा हैं। इस दृष्टी से यहाँ विभिन्न लोक गीतों का प्रचलन हैं जिनका वर्गीकरण निम्न हैं –

पर्व/त्यौहारों से सम्बंधित लोकगीत : - छत्तीसगढ़ में विभिन्न पर्वों एवं त्यौहारों से संबंधित लोकगीत गाये जाते हैं। ये लोक गीत लोगों की खुशियाँ व्यक्त करती हैं, और उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं की झलक भी दिखाती हैं। ये लोक गीत छत्तीसगढ़ के क्षेत्र, भाषा और परंपराओं के अनुसार विविध हैं। नीचे कुछ प्रमुख पर्व/त्यौहारों और उनसे संबंधित लोकगीतों का उल्लेख किया गया है:

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

1. **भोजली गीत :-** भोजली गीत प्रकृति को समर्पित एक लोक गीत हैं इस गीत को गाने से पूर्व छत्तीसगढ़ की महिलायें सावन शुक्ल नवमीं को एक टोकरी में धान, गेहूं और जौं के दाने खाद मिट्टी में बोती हैं, जब उनसे हरे पौधे उगते हैं तो उसे भोजली देवी मानकर यह गीत गाया जाता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

"आ हो देवी गंगा, देवी गंगा देवी गंगा लहरा तुरंगा भोजली,

लहरा तुरंगा, हमरो भोजली दाई के भीगे आठो अंगा, आहो देवी गंगा।

2. **जंवारा गीत** :- यह चैत्र नवरात्रि में गाये जाने वाली एक धार्मिक लोक गीत हैं, जिसे यहाँ के लोग सेवा भाव से गाते हैं। जंवारा गीत माँ दुर्गा और उनके स्वरूपों को ध्यान में रख कर गाया जाता हैं। जंवारा गीत में जस गीत, पचरा गीत और विसर्जन गीत भी शामिल होता हैं। इसमें से जस गीत कुछ इस प्रकार हैं –

"मईया फूल गजरा, गूँथव हो मलिन के देहरी फूल गजरा...."

3. **गौरा-गौरी गीत :-** यह गीत छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख लोक गीत हैं, जो भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित गीत हैं।

"एक पतरी रयनी भयनी, राय रतन ओ दुरगा देवी।"

4. **फ़ाग गीत :-** यह लोक गीत फागुन माह में होली पर गाई जाने वाली लोक गीत है। जिसमे राधा और कृष्ण का वर्णन होता हैं।

"ये हो मोहन खेले होरी, काकर हाथ मा रंग कटोरा..."

करुणा एवं वेदना से सम्बंधित लोक गीत

करुणा एवं वेदना से संबंधित लोक गीतों में जनसामान्य की पीड़ा, दुःख, वियोग का दर्द, सामाजिक अन्याय, या प्राकृतिक आपदाओं का मार्मिक चित्रण होता है। छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे लोक गीत प्रचलित हैं, जो हृदय को छू जाते हैं। नीचे कुछ प्रमुख करुणा एवं वेदना से सम्बंधित लोक गीत दिए गए हैं:-

1. **बांस गीत :-** छत्तीसगढ़ के सबसे पुराने लोक गीतों में से एक हैं, जिसे दुःख के अवसर पर गाया जाता हैं। राउत जाति के लोग इस गीत को गाने में निपूर्ण होते हैं।

"सदा भवानी मोर दुर्गा दहिमाला, काला सोहय सिर सिंदूर भवानी..."

2. **बिदाई गीत :-** यह गीत कन्या के बिदाई के समय गाया जाने वाला एक वियोग के दर्द को व्यक्त करने वाला गीत हैं।

"आजि के चंदा नियरे ओ नियरे दाई मैं काली जाहूं बड़ दुरे,

अपन दाई के राम दुलौरिन, ये दाई मोला छीन भर कोरा म लेले।"

3. **भरथरी गीत :-** भरथरी छत्तीसगढ़ का एक लोक गीत हैं जो राजा भरथरी और रानी पिंगला के वैराग्य जीवन का वर्णन करता हैं। छत्तीसगढ़ में भरथरी को सुरूजबाई खांडे ने ख्याति प्रदान करवाई।

"घोड़ा रोय घोड़सारे मा, घोड़सारे मा ओ,

हाथी रोय हाथीसारे मा, मोर रानी ये ओ, महल मा रोवय,

मोर राजा रोवय दरबारे मा ओ, दरबारे, दरबारे मा ओ..."

प्रेम-प्रणय से सम्बंधित लोक गीत

छत्तीसगढ़ी लोक गीत में पर्याप्त मात्र में श्रृंगार रस से परिपूर्ण प्रेम गीत देखने को मिलता हैं। प्रेम-प्रणय से सम्बंधित लोक गीत प्रेम की विभिन्न भावनाओं - संयोग, वियोग, तड़प, संकोच और समर्पण को बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करते हैं। नीचे कुछ प्रमुख लोक गीत का वर्णन किया जा रहा हैं:

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

1. **ददरिया :-** ददरिया को छत्तीसगढ़ के लोक गीतों का राजा कहा जाता हैं। इसे श्रम गीत भी कहा जाता हैं क्योंकि फसल बोते समय गाया जाता हैं, ददरिया को प्रेमगीत के रूप में भी जाना जाता हैं। फसल बोते समय युवक-युवती अपने मन की बात को गीत के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

"लड़की – करै मुखारी करौंदा रुख के, एक बोली सुना दे अपन मुख के,

लड़का – एक ठिन आमा के दुई फाकी, मोरी आंखिच, आंखिच झुलथे तोरिच आंखी"

2. **चंदैनी गायन :-** यह लोक गीत लोरिक और चंदा के प्रेम प्रसंग पर आधारित हैं, इसे राउत जाति के लोगों द्वारा गाया जाता हैं। लोरिक और चंदा छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध प्रेमी युगल थे, जिसमे लोरिक रीवा का निवासी एवं चंदा आरंग की निवासी थी।

3. **डंडा गीत :-** यह छत्तीसगढ़ का रास गीत है, जिसमे युवक-युवतियां वृताकार हो कर घूम-घूम कर हाथ में छोटी डंडा लिए नृत्य करते हैं।

"उड़ भागे रे निकल भागे रे,

परदेशी सुआ रे माया लगाके उड़ भागे"

नृत्य से सम्बंधित लोक गीत

छत्तीसगढ़ में कुछ ऐसे भी लोक गीत हैं जो नृत्य के समय गाया जाता हैं। जिसमे गीत की विशिष्टता शारीर की भाव-भंगिमा को निर्धारित करता हैं। यह लोक गीत लोक सामान्य का मनोरंजन करता है और उनमे उत्साह और प्रेरणा भरता हैं। कुछ प्रमुख नृत्य सम्बंधित लोक गीत निम्न हैं

1. **सुआ गीत** :- छत्तीसगढ़ में सुआ नृत्य के समय केवल महिलाओं द्वारा यह लोक गीत गाया जाता हैं। यह गीत श्रृंगार रस से ओतप्रोत होता हैं, जिसमे किशोरियां अपने प्रेमी को सुआ के माध्यम से सन्देश भेजती हैं।

"तरि हरि नहा नरि ना ना रे सुअना"

2. **करमा गीत** :- करमा नृत्य करते समय यह गीत गाया जाता हैं। करमा गीत बरसात शुरुवात से फसल काटने तक गया जाता हैं।

"चलो नाचे जाबा रे गोलेंदा जोड़ा,

करमा तिहार आये हैं, नाचे जाबो रे"

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की भाषा अभिव्यक्ति

इन लोक गीतों में मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रयोग किया जाता हैं, जो छत्तीसगढ़ की जनसामान्य की भाषा हैं। इन लोक गीतों में हिंदी भाषा का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता हैं। इन लोक गीतों में सरल, सुबोध एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया जाता हैं, जिससे लोग इस गीत में सराबोर हो जाये। लोक गीतों के शब्दों एवं धुन दोनों में मस्ती होती हैं, जिसे सुन कर लोग मस्त-मगन हो जाते हैं।

लोक गीतों की विशेषता

लोक गीत के कुछ प्रमुख विशेषता निम्नलिखित हैं –

1. लोक गीत जनसामान्य द्वारा निर्मित होता हैं।
2. लोक गीत किसी भी संस्कृति की आत्मा को अभिव्यक्त करती हैं।
3. लोक गीत की भाषा आम बोलचाल वाली होती हैं, जिससे समाज के सभी लोग आसानी से समझ और गा सकें।
4. लोक गीतों में क्षेत्र विशेष की परंपराएँ, मान्यताएँ, रीति-रिवाज़, एवं सामाजिक जीवन दिखाई देता हैं।
5. लोक गीत अलिखित रूप से समाज में उपलब्ध होता हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से स्थानांतरित होता रहा हैं।
6. लोक गीत में रचयिता, रचनाकाल, एवं प्रमाणीकरण का आभाव होता हैं।
7. लोक गीत सामाजिक, धार्मिक मान्यताओं से जुड़े होते हैं।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ भी अन्य राज्यों की तरह लोक संगीत में समृद्ध हैं, यहाँ की लोक गीतों में प्रकृति के प्रति झुकाव हैं जो यहाँ की कृषि प्रधान राज्य होने की विशेषता को दर्शाता हैं। छत्तीसगढ़ की लोक गीत और लोक नृत्य प्रमुख विशेषता हैं। छत्तीसगढ़ में विविध बोली हैं जो क्षेत्र के अनुसार बदलता हैं तो ये भाषा परिवर्तन हमें लोक गीतों में भी देखने को मिलता हैं। सरगुजा की लोक गीतों में सरगुजिहा भाषा का प्रभाव, बस्तर के लोक गीतों में हल्बी, गोंडी आदि भाषा का प्रभाव देखने को मिलता हैं, इस तरह यहाँ का लोक गीत भाषा विविधता की दृष्टी से भी परिपूर्ण हैं। यहाँ के लोगो द्वारा विभिन्न पर्वों, उत्सवों, मेलों, नृत्यों में लोक गीत गाया जाता हैं, जो सांस्कृतिक धरोहर को एक पीढ़ी से दुसरे पीढ़ी को मौखिक रूप में स्थानांतरित करता हैं।

सन्दर्भ

Sharma, Dr. Dev Raj. (2024). सिरमौरी लोक गीतों का सांगीतिक अध्ययन. Swar sindhu, 12(2), 16-21.

दुबले, प्रांची. (2018). बुनावट एवं बनावट, छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की. Sangeet galaxy, 7(1), 41-51.

पटेल, हरी राम. (2023). छत्तीसगढ़ विशिष्ट अध्ययन. HR Publication, पृष्ठ 382-392.

https://ignca.gov.in/coilnet/chgr0029.htm

https://ignca.gov.in/coilnet/chgr0043.htm

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%9B%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B8%E0%A4%97%E0%A4%A2%E0%A4%BC%E0%A5%80_%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%95%E0%A4%97%E0%A5%80%E0%A4%A4

https://www.nios.ac.in/media/documents/OBE_indian_knowledge_tradition/Level_A/Vocational_Skills/Hindi/Voc-A_Hindi_Ch-6.pdf